स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य-जन उद्घोष

डॉ विष्णु कुमार[1], डॉ जय प्रकाश सिंह[2]

[1]सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग), जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं।

[2]सहायक आचार्य (दूरस्थ शिक्षा), जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं।

सारांश

स्वच्छता केवल सरकार की तरफ से नगरपालिका के सिर्फ चयनित सरकारी कर्मचारियों का कार्य नहीं है। बल्कि अपने देश के सभी नागरिकों का इसमें योगदान देना जरूरी है। स्वच्छता से लड़ने की जिम्मेदारी सामूहिक रूप से जन आंदोलन द्वारा होनी चाहिए। जाने अनजाने में मौज-मस्ती एवं स्वार्थपूर्ण विकास में पर्यावरण को काफी नुकसान पहुंचाया है जिससे आये दिन नवनीत बीमारियां फैल रही हैं। जैसे- वाइरल बुखार, स्वाइन फ्लू, कोरोना वाइरस आदि। स्वच्छता जागरूकता के कार्य को प्रेरित करने के लिए कई नामी हस्तियां जैसे- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं अन्य नेता, सचिन तेन्दुलकर, अमिताभ बच्चन आदि ने प्रेरणारूपी सहयोग कार्य किया है। सरकार की ओर से भी स्वच्छ भारत अभियान में कई मंत्रालय सम्मिलित हैं। जैसे- शहरी विकास मंत्रालय, राज्य सरकार एवं ग्रामीण विकास मंत्रालय, गैर-सरकारी संगठन पेय जल एवं स्वच्छता मंत्रालय आदि। बच्चों में अच्छी आदतों के रूप में स्वच्छता को शामिल किया जाना चाहिए। यदि हमने स्वच्छता पर ध्यान नहीं दिया तो आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी। इसलिए जरूरी है कि हम जिस परिवेश में रह रहे हैं उसे स्वच्छ बनाये। इसमें स्वच्छता जागरूकता शिक्षा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

प्रस्तावना

स्वच्छता एक अच्छी आदत है जो हम सभी को अपने आस-पास पर्यावरण की सफाई रखने के साथ स्वयं को स्वच्छ रखने में मदद करती है। यह धरती पर हमेशा जीवन को संभव बनाने के लिए पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों (भूमि, पानी एवं खाद्य पदार्थ) को साफ बनाये रखने में मदद करता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि "हमारे स्वास्थ्य, जीवन शैली और जीवन के स्तर को बनाये रखने के लिए स्वच्छता बहुत जरूरी है।" दैनिक जीवन

में हम अपने बच्चों को साफ-सफाई के महत्त्व और इसके उद्देश्यों को सिखाते हैं। अच्छा स्वास्थ्य किसी को भी बेहतर ढंग से सोचने और समझने की ताकत प्रदान करता है जिसके केन्द्र में आदर्श जीवन शैली होती है। स्वच्छता के कई क्षेत्र हो सकते हैं- सामाजिक, व्यक्तिगत एवं वैचारिक। वैचारिक स्वच्छता हमें एक अच्छा इंसान बनाती है तो वहीं व्यक्तिगत स्वच्छता हमें हानिकारक बीमारियों से बचाती है। सामाजिक स्वच्छता हमें सार्वभौमिक स्वच्छता की ओर ले जाती है। भारत सरकार ने स्वच्छता की आवश्यकता को समझते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त, 2014 को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें गंदगी और खुले में शौच के खिलाफ लड़ाई लड़नी है। हमें पुरानी आदतों को बदलना है। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के वर्ष 2019 तक स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है। जिसकी शुरूआत 2 अक्टूबर 2014 को गांधी जयंती के मौके पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय स्तर पर शुरू किया। साथ ही 15 सितम्बर को "स्वच्छता ही सेवा" के उद्घोष के साथ शुरू किया। इस अभियान के तहत सरकार ने शहर एवं गांव दोनों क्षेत्रों में स्वच्छता को बढ़ावा देने की बात की है जिसके अंतर्गत पूरे भारत को खुले में शौचमुक्त करने का अभियान चलाया। यह स्वच्छता अभियान कई नामों से चलाये गये जैसे- स्वच्छ भारत, निर्मल भारत, बाल स्वच्छता अभियान, एक कदम स्वच्छता की ओर आदि-आदि। इसकी जिम्मेदारी नगर निगम के कर्मचारियों पर ही न हो, बल्कि सभी लोग इस अभियान को सफल बनाने में अपना श्रमदान करें। इस कार्य को प्रेरित करने के लिए कई नामी हस्तियों का प्रेरणारूपी सहयोग करते हुए आप टी.वी. पर भी देखते होंगे जैसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं अन्य नेता, सचिन तेन्दुलकर, अमिताभ बच्चन एवं अक्षय कुमार आदि। महात्मा गांधी ने कहा था- स्वच्छता आजादी से भी महत्त्वपूर्ण है। स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई करना ही नहीं अपितु नागरिकों में सहभागिता के साथ कचरे का उचित निपटारा करने, प्रदूषण मुक्त वातावरण का निर्माण के लिए अत्यधिक वृक्षारोपण, स्वच्छ पेय एवं शौचालय की सुविधा की उपलब्ध करवाकर स्वच्छ भारत का निर्माण करना है।

स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में सामुदायिक एवं सार्वजनिक शौचालय बनवाना।
2. ग्रामीण जीवन स्तर को ऊपर उठाना।
3. भारत में खुले में शौचमुक्त करना।
4. पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधन (भूमि, जल एवं खाद्य पदार्थ) को संरक्षण प्रदान करना।

5. साफ-सफाई से सम्बन्धित सभी व्यवस्था (डिजाइन एवं संचालन) को नियंत्रित एवं मजबूती प्रदान करना।
6. जनजागृति पैदा करने के लिए कार्यक्रम।
7. नागरिकों की सहभागिता द्वारा अधिक से अधिक पेड़ लगवाये।

व्यावहारिक वातावरण और स्वच्छता

जिस जगह पर हम रहते हैं उसके आस-पास या चारों ओर का परिवेश को व्यावहारिक वातावरण के रूप में मान सकते हैं। अर्थात् व्यक्ति जहां है उसके चारों ओर के परिवेश को व्यावहारिक वातावरण कहते हैं। यह व्यावहारिक वातावरण निम्न क्षेत्रों में विभाजित कर समझ सकते हैं-

परिवार- यदि परिवार के बड़े सदस्य स्वच्छता के महत्त्व को समझते हुए स्वच्छ कपड़े, स्वच्छ खाना आदि का प्रयोग करते हैं। इससे उनके परिवार के छोटे सदस्य भी अनुकरण के रूप में सीखेंगे। परिवार के बड़े सदस्यों को चाहिए कि छोटे सदस्यों को मार्ग प्रशस्त कर उसके व्यावहारिक क्रियाकलापों में भी भागीदारी करवाये। जैसे- सूर्योदय से पहले उठना, सुबह उठकर प्रतिदिन पानी पीना, भ्रमण पर जाना तथा शौचालय के बाद साबुन से हाथ धोना आदि। इस प्रकार पारिवारिक वातावरण स्वस्थ हो सकेगा।

घर- घर की साफ-सफाई नियमित होती है पर समय पर जैसे- पूर्व विशेष योजना के साथ ख्याल रखना चाहिए। जैसे- महीने में एक बार पंखे या लाइट की सफाई एक बार अवश्य करवायें, घर के कोने में लगे मकड़ी के जाले को, बाथरूम के टायलेट के लिए टायलेट क्लीनर का उपयोग करें, फर्श की सफाई प्रतिदिन हो, खाना खाने के बाद रातभर बिना धुली थाली नहीं रखनी चाहिए। इससे गंदगी या बदबू फैल सकती है, गंदगी कूड़े-दान में ही डालें आदि। इस तरह नियमित सफाई पर ध्यान देने से हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी अच्छा होगा और घर में भी स्वच्छ वातावरण का निर्माण होगा।

समाज- समाज को स्वच्छ बनाने के लिए प्राचीन परम्परा, धार्मिकता एवं संस्कार के रूप में देखने को मिलता है। एक समय था जब जीवनशैली पर्यावरण या सामाजिक व्यवस्था के लिए जरूरी बातों को आचार-विचार से जोड़ दिया जाता था। आज समाज में इधर-उधर तरह-तरह की गंदगी, पर्यावरण समस्याएं, जलवायु परिवर्तन, अस्वच्छता दिखायी देती है-

क. जल प्रदूषण- "जल है तो कल है।" इस बात पर ध्यान रखते हुए इसका व्यवस्थित उपयोग के साथ-साथ इसे स्वच्छ रखने के लिए प्रदूषण से भी बचाना होगा। जैसे- खुले में शौच के बाद नदी या तालाब के पानी में हाथ धोने से, औद्योगिक एवं नगर का गंदा पानी सीधे तालाब या नदी में प्रवाहित करने से आदि। यहां यह ध्यान रखना होगा कि इस तरह की गतिविधियां जल को प्रदूषित करती हैं। इसलिए उचित यह होगा कि नगर का गंदा पानी सीधे प्रवाहित करने की जगह वैज्ञानिक तरीके से फिल्टर होकर प्रवाहित किया जाये। साथ ही सुव्यवस्थित उपयोग के तहत पानी का उचित उपयोग पर ध्यान दिया जाये। जैसे- ब्रश एवं दाढ़ी बनाते समय नल खुला न रखें, बर्तन धोते समय भी नल खुला न रखा जाये, नल से बुंद-बुंद पानी न टपकने दें।

ख. वायु प्रदूषण- औद्योगिक विकास, परिवहन एवं अन्य मानव गतिविधियों के द्वारा वायु प्रदूषण तेजी से हो रहा है। वायु को स्वच्छ रखने में जहां तक हो सके वृक्षारोपण लगायें। व्यक्तिगत वाहनों के स्थान पर सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग किया जाये। कूड़ा खुले में न जलायें, कूड़े का उचित विघटन/निपटारा किये जाने पर विचार करें, कारखाने से निकलने वाले चिमनियों के धुएं व धूल के लिए वैज्ञानिक नियंत्रण यंत्र का उपयोग किया जाये। आधुनिक रूप से बिजली से चार्जिंग वाले वाहन के उपयोग पर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए। उपर्युक्त कार्यों द्वारा वायु प्रदूषण को कम एवं स्वच्छ रखने में मदद हो सकती है।

ग. प्लास्टिक का कचरा- समाज में आजकल चारों तरफ प्लास्टिक का कचरा देखने को मिलता है। इसके प्रदूषण को कम करने के लिए प्लास्टिक का बहिष्कार या कम से कम उपयोग करना होगा, खासकर जिसका एक बार उपयोग हो। इसके कम इस्तेमाल की परिचर्चा करें। इसके रिसाइकिलिंग की व्यवस्था की जाये। जहां तक हो सके इसकी जगह कपड़े की थैली का उपयोग करें।

घ. ई-कचरा- समाज में विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रिक एवं इलेक्ट्रॉनिक कचरा देखने को मिलता है। जिसमें अनेक प्रकार की कीट के परिपथ एवं उनमें लगने वाले सामान जो काफी जहरीले पदार्थों से बने होते हैं जैसे-सल्फर, सिलिकान, क्रोमियम आदि। इससे वातावरण प्रदूषित होता है। इस ई-कचरे का उचित रूप से निपटारा किया जाना चाहिए, ताकि पर्यावरण स्वच्छ बना रह सके। ई-कचरा प्रबन्धन (संशोधन) विधेयक 2018 पारित हो चुका है, इसे कड़ाई से लागू किया जाना चाहिए।

शैक्षणिक संस्थान- शिक्षण संस्थानों के वातावरण को स्वच्छ बनाकर बच्चों एवं शिक्षकों के जीवन को स्वस्थ रखा जा सकता है। जैसे- स्वच्छता से सम्बन्धित पाठ बच्चों को पढ़ाये जाने चाहिए। प्रत्येक कक्षा में डस्टबिन हो जिससे बच्चे गंदगी इधर-उधर न फैलायें, पीने के पानी की टंकी की नियमित रूप से सफाई होती रहनी चाहिए। स्टॉफ एवं बच्चों दोनों के लिए अलग-अलग शौचालय की व्यवस्था की जानी चाहिए। स्कूल के खेल के मैदान की उचित व्यवस्था हो। कक्षा, प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय की नियमित सफाई भी हो। स्कूल में उचित जगह पर पेड़-पौधे एवं गार्डन/गमले में पौधे लगाकर रखवाने की व्यवस्था की जा सकती है।

कार्यस्थल- अपने कार्यालय को साफ-सुथरा रखना चाहिए, इससे कार्य करने की सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। जैसे- कार्यालय में प्रतिदिन अपना डेस्क एवं कम्प्यूटर पर धूल गंदगी न रहने दें। फाइलों को अस्त-व्यस्त न छोड़ें, चाय के जुठे कप या गिलास न छोड़ें। कार्यालय में उचित कूड़ेदान की व्यवस्था हो। कार्यस्थल पर गमले एवं उसमें पौधों को भी स्थान दिया जाये।

धार्मिक एवं दर्शनीय स्थान- प्रत्येक धार्मिक एवं दर्शनीय स्थान पर लोग साफ-सुथरे होकर जाते हैं पर वहां की जगह को अपनी गलत आदतों एवं गतिविधियों की वजह से प्रदूषित करते हैं। जैसे- मंदिरों में फूल-प्रसाद अपनी श्रद्धानुसार लेकर जाते हैं, पर पूजा के बाद फूल एवं प्रसाद का इधर-उधर कुछ बिखरा हुआ मंदिर में आपको देखने को अवश्य मिलता है। उसको उचित पात्र में न डालने के कारण गंदगी फैलती है। हालांकि मंदिर का गर्भगृह हमेशा स्वच्छ किया जाता है। इसकी गंदगी मंदिर प्रांगण के बाहर इकट्ठा होती जाती है जिससे वातावरण में कचरे का ढेर तैयार हो जाता है। दर्शनीय स्थलों पर भी लोग घुमने जाते हैं। जैसे- हिल स्टेशन, तीर्थस्थल एवं वन्य जीव अभ्यारण आदि। अपने साथ लोगों द्वारा खाने-पीने की सामग्री भी ले जायी जाती है। इनको उपयोग के बाद उसे वहीं इधर-उधर फैंक दिया जाता है। जैसे- बचे हुए खाद्य पदार्थ, प्लास्टिक की बोतलें एवं रैपर आदि। जबकि होना यह चाहिए था कि उसे उचित जगह पर डाला जाये, ताकि इसका निराकरण हो सके। यदि ऐसी स्थिति बनती रही तो कुछ धार्मिक स्थलों जैसे अमरनाथ, वैष्णोदेवी, केदारनाथ आदि ऐसी जगहें अपने अस्तित्व को बचाने की लड़ाई लड़ रहे होंगे। इसलिए जरूरी है कि हम अपने व्यावहारिक वातावरण को स्वच्छ बनायें।

मेले एवं विवाह समारोह- मेले एवं विवाह समारोह के दौरान काफी सजावट एवं पर्याप्त खाद्य पदार्थों की व्यवस्था होती है। इस दौरान विभिन्न प्रकार की मानसिकता वाले व्यक्तियों द्वारा

अव्यवस्थित कार्य के कारण गंदगी एवं कूड़ा-करकट फैल जाता है। दूसरे दिन सफाई न होने के कारण बदबू फैल जाती है इससे वातावरण में प्रदूषण फैलता है। यह कई बीमारियों को जन्म दे सकता है। इसमें कई तरह के कचरा होता है। इन्हें अलग-अलग उचित रूप से निराकरण के लिए व्यवस्था की जानी चाहिए। जैसे- जूठन एवं शेष बचे खाद्य पदार्थों के लिए अलग से डब्बा, प्लास्टिक की बोतल एवं रैपर के लिए अलग डब्बे की व्यवस्था हो आदि।

स्वच्छता जागरूकता शिक्षा के माध्यम

शिक्षा का तात्पर्य मात्र अक्षर ज्ञान ही नहीं है अपितु यह बालक को अवबोधन (समझ) कराती है। उसे अच्छे या बुरे में भेद करने योग्य बनाती है। अनैतिक आचरण से दूर करती है तथा बालक में अनुशासन और निष्ठा के साथ चरित्र निर्माण का कार्य करती है। शिक्षा के माध्यम से एक पीढ़ी का ज्ञान दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करने का कार्य हो सकता है। इस कारण शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन की एक मूलभूत आवश्यकता एवं साधन के रूप में स्वीकार किया जाता है। शिक्षा के माध्यम से बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा द्वारा स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता लाने के लिए निम्न माध्यमों से प्रयास किया जा सकता है-

शिक्षा के माध्यम से: औपचारिक शिक्षा-स्कूल, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय, अनौपचारिक शिक्षा-प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, संग्रहालय, सार्वजनिक पुस्तकालय।

मुद्रित सामग्री- नारे, हस्तपत्र, बैनर एवं समाचार पत्र।

इलेक्ट्रानिक संचार माध्यम- आडियो-वीडियो कैसेट, स्लाइड, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं सोशल मीड़िया।

सांस्कृतिक माध्यम- लोकगीत, नृत्य, यात्रा-जात्रायें (नाट्यकला)

सम्मेलन- स्वच्छता, समस्या-समाधान एवं स्वास्थ्य

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय दिवस- किसी भी राष्ट्रीय दिवस या अन्तर्राष्ट्रीय दिवस पर स्वच्छता के कार्य को प्राथमिकता दी जाये।

प्रदर्शन- स्वच्छता समस्याओं, प्रबन्धन एवं संरक्षण सम्बन्धी जानकारी।

मानव शृंखला- स्वच्छता से केन्द्रित विशेष अवसरों पर बनाना।

सर्वेक्षण एवं जनसम्पर्क- स्वच्छता रखने के लिए मास्टर प्लान तैयार करना।

प्रतियोगिता का आयोजन- विषय पर निबन्ध, वाद-विवाद, नाटक, चित्रांकन, प्रश्नोत्तरी आदि।

दलों का गठन- स्कूलों में स्थानीय स्थल पर सक्रिय कार्यालय, गैर-सरकारी संगठन

जन आंदोलन- सभी वर्गों एवं व्यवसाय के लोगों को जोड़ा जाय।

कार्य योजना- स्वच्छता हेतु प्रबन्धन, अल्प एवं दीर्घकालीन अवधि की कार्ययोजना जैसे- सफाई, वृक्षारोपण आदि।

कानून- स्वच्छता के लिए सरकार सख्त कानून बनाये जिसमें आर्थिक रूप से सजा के प्रावधान के साथ-साथ पर्यावरण की सुरक्षा/देखभाल की भी सजा का प्रावधान हो।

सतत प्रक्रिया- ऐसी प्रक्रिया जिसमें वर्तमान पीढ़ी को स्वच्छता की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रतिदिन व्यावहारिक कार्य में अपनाना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग- विकसित देशों को चाहिए कि विकासशील देशों को स्वच्छता पर सहयोग प्रदान करें।

अन्य प्रयास- स्वच्छ भारत अभियान पोर्टल खुला है जहां पहले और बाद की तस्वीरें साझा कर सकते हैं। अर्थात् आपने स्वच्छता पर यदि कोई कार्य किया है जिससे आपके शहर/ग्राम में स्वच्छता में सुधार हुए हैं उसके कार्य को प्रमाणित रूप से दिखाने का अवसर प्रदान कर रहा है।इस तरह शिक्षा द्वारा स्वच्छता जागरूकता की दिशा में बहुआयामी प्रयास किये जायें, साथ ही विवेकपूर्ण प्रश्नों जैसे- विकास किसके लिए और किस कीमत पर? चिन्तनपूर्ण मानवीय पक्ष रखते हुए स्वच्छता को बतायें। क्या हम ईमानदारी से कह सकते हैं कि हमने किसी ऐसे व्यापक मुद्दे पर सबक सीखा है? अगर मौजुदा नीतियों एवं व्यवहार को देखें तो दुर्भाग्यवश, तमाम पहलुओं पर हमने जवाब न में ही मिलता है। आज ''कोरोना वायरस'' नामक बीमारी फैल रही है। यह न सिर्फ एक देश (चीन) की सीमाओं में न रहकर पूरे विश्व में अपने पैर फैला रहा है जिसका फिलहाल कोई इलाज पूरे विश्व में नहीं है। इसे रोकने के लिए एकमात्र उपचार साफ-सफाई एवं स्वच्छता को अपनाना होगा। हालांकि इस विषय पर विश्व के सभी देश एक-दूसरे को वैज्ञानिक जानकारी साझा कर रहे हैं ताकि इस पर नियंत्रण पाया जा सके।

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि स्वच्छता को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। इसके लिए माता-पिता अपने बच्चों को जिस प्रकार चलना, पढ़ना और लिखना सिखाते हैं, ठीक उसी तरह उन्हें जरूरी समझकर स्वच्छता एक स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक मानकर अपने बच्चों को साफ-सफाई की आदत डालनी चाहिए। जिससे स्वच्छता हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन जाए। ठीक उसी प्रकार हमें बच्चों को व्यक्तिगत सफाई के साथ-साथ अपने परिवेश की सफाई भी सिखाना चाहिए। उन्हें शिक्षा द्वारा यह भी समझाना चाहिए कि समाज एवं देश की सफाई भी हमारा कत्र्तव्य है। जिस प्रकार हवा और भोजन जरूरी है उसी प्रकार स्वच्छता भी जरूरी है। स्वच्छता हालांकि यह अभियान सरकार द्वारा शुरू किया गया है लेकिन देश के प्रत्येक नागरिक का इसमें योगदान के बिना यह संभव नहीं हो पायेगा। अपने देश को स्वच्छ बनाने के लिए निरन्तर प्रयास करते रहना होगा, साथ ही अपने आस-पास के लोगों को भी स्वयं के कार्यों द्वारा उन्हें प्रेरित करना भी होगा। सरकार की ओर से भी स्वच्छ भारत अभियान में कई मंत्रालय शामिल हैं जैसे- शहरी विकास मंत्रालय, राज्य सरकार ग्रामीण विकास मंत्रालय, गैर-सरकारी संगठन, पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय आदि। स्वच्छता की तरफ बढ़ाये गये कदम आगे चलकर स्वच्छ भारत का निर्माण की यह एक प्रक्रिया ही रंग लायेगी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. रघुवंशी, अरूण एवं रघुवंशी, चन्द्रलेखा, पर्यावरण तथा प्रदूषण, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल-4, संस्करण 1990, पृ. 322.
2. सिंह, भोपाल, पर्यावरण शिक्षा, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली, संस्करण 1999, पृ. 288.
3. सोजित्रा, विजय एस., वैदिक संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण: आधुनिक पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान, पैराडाइज पब्लिशर्स, जयपुर (भारत), संस्करण 2011
4. शर्मा, लोकेश, पर्यावरण शिक्षा (विज्ञान) एवं उसका शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा-2, संस्करण 2014.
5. मेहता, ओम प्रकाश, भारतीय पर्यावरणीय आचरण शास्त्र: सनातन परम्परा का रचनात्मक सर्वेक्षण, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली, संस्करण 2015.

6. पर्यावरण विमर्श ''इलेक्ट्रानिक वाहनों से बचायें पर्यावरण'' वर्ष-23, वोल्यूम-2, अप्रैल-जून, 2018, पृ. 24.
7. प्रतियोगिता दृष्टि ''ई-कचरा प्रबन्धन (संशोधन) विधेयक 2018 पारित'', वर्ष 2012, अंक-4, 3 अप्रैल, 2018, पृ. 28.
8. indi.Indiawaterportal.org.
9. www.gkexam.com.ask.
10. www.livehindustan.com.